International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 33-37

प्रयाग की द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता

बृजेन्द्र कुमार

शोधार्थी, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग मेघालय, भारत।

प्रस्तावना

भारतेंदु युग के अनेक साहित्यकार–पत्रकारों का उत्तरकाल द्विवेदी युग में विलुप्त होता है। इन दोनों युगों की भावभूमि में कुछ ऐसी समता है कि कहीं कोई संधिकाल नहीं मिलता, जबकि इन दोनों युगों के साहित्यकार–पत्रकारों के व्यक्तित्व में बहुत अंतर दृष्टिगत होता है। भारतेंदु युग के साहित्यकार–पत्रकारों से बना 'भारतेंदु मंडल' आत्मीयता की भावभूमि पर निर्मित था, इसके विपरीत द्विवेदी युग के साहित्यकार–पत्रकारों से निर्मित 'द्विवेदी मंडल' का आधार अनुशासन था। इस बात में कोई संदेह नहीं की भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र अपने समय के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र की अपेक्षा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनात्मक स्तर पर कमतर थे; यहाँ तक उनकी रचनाओं से अधिक उत्कृष्ट उनके शिष्यों यथा– मैथिलीशरण गुप्त और प्रेमचंद की रचनाएँ होती थीं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के व्यक्तित्व में कोमलता और भावुकता का समावेश था, इसके विपरीत आचार्य द्विवेदी का व्यक्तित्व कठोरता और अनुशासन–प्रियता के सम्मिश्रण से निर्मित था।

भारतेंदु युग के पश्चात हिंदी क्षेत्र में शिक्षा–साक्षरता का प्रभाव तीव्र गति से बढ़ने लगा था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से हिंदी खड़ी बोली गद्य और पद्य दोनों विधाओं के लिए केंद्रीय भाषा बन रही थी। इसके बावजूद पद्य में ब्रजभाषा के कुछ समर्थक अपनी रचनाओं के सृजन के साथ अभी भी अपने मत पर दृढ बने हुए थे। आचार्य द्विवेदी के निर्देशन में इस समय के साहित्यकार–पत्रकारों ने अपनी रचना–नीति में परिवर्तन करने आरंभ कर दिए और आचार्य द्विवेदी के दिशा–निर्देशन को संपूर्ण देश के साहित्यिकों तक पहुँचाकर उसकी महत्ता से परिचित कराने का दायित्व प्रयाग के साहित्यकार–पत्रकारों ने उठाया, और इस दायित्व का निर्वहन इन्होने पूर्ण निष्ठा के साथ किया। इस समय के अधिकांश साहित्यकार या तो आजीविका के लिए या फिर शौकिया पत्रकारिता से जुड़े हुए थे। द्विवेदी युग के अधिसंख्य लेखक पत्रकार भी थे, इसी कारण प्रयाग के साहित्यकार–पत्रकारों द्वारा प्रसारित आचार्य द्विवेदी के विचारों और निर्देशन से शीघ्र ही हिंदी साहित्य के अधिकांश रचनाकार परिचित हो गए, जिससे हिंदी का भाषा परिष्कार संभव हो सका।

पत्रकारिता और साहित्य के संबंधों की चर्चा होने पर यह कहा जाता है कि युगीन यथार्थ ही पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य में जन्म लेता है। जब रचनाकार यथार्थ की सूक्ष्मता पर ध्यान केन्द्रित रखता है तब साहित्य में सामयिकता की प्रधानता होती है और सामयिकता की बहुलता से साहित्य की विशिष्टता एवं शाश्वतता में कुछ कमी आ जाती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि द्विवेदी युग का अधिकांश साहित्य पत्रकारिता के माध्यम से ही प्रकाश में आया। द्विवेदी युग का केंद्र प्रयाग होने के कारण हिंदी के अधिकांश उत्कृष्ट साहित्य के प्रकाश में आने का माध्यम प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता ही बनी। इस संदर्भ में डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी का मंतव्य दृष्टव्य है– "हिंदी पत्रकारिता के साहित्य को दो भागों में बाँटा जा सकता है। एक वह भाग है जो पुस्तक रूप में प्रकाशित या अप्रकाशित रूप में उपलब्ध है। इसमें शोध–प्रबंध, लघु शोध–ग्रंथ और पुस्तकें आती हैं। परंतु दूसरा साहित्य ऐसा है जो बिखरे हुए रूप में प्रकाशित होता रहता है। यह साहित्य विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होता है। इसे हम लेख–साहित्य भी कह सकते हैं।"[01]

द्विवेदी युगीन साहित्य में उपर्युक्त दोनों प्रकार से साहित्य–संवर्द्धन में प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता का अभूतपूर्व योगदान है। द्विवेदी युग में प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता के नेतृत्व में केवल प्रयाग ही नहीं, अपितु संपूर्ण देश में हिंदी पत्रकारिता के कीर्तिमान स्थापित हुए। भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनके सहयोगी साहित्यकारों द्वारा हिंदी पत्रकारिता को नयी साहित्यिक पृष्ठभूमि प्रदान करने के प्रयत्नों को द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कुशल नेतृत्व में मूर्त रूप प्रदान किया गया। आचार्य द्विवेदी के संपादन में 'सरस्वती' के प्रकाशन से साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन–कार्य भाषा के परिष्कार के साथ तीव्रता से आरंभ हो गया। प्रयाग से प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाएं तत्कालीन समय में हिंदी भाषा की उत्कृष्ट रचनाओं के लिए विख्यात हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में प्रकाशित 'सरस्वती' का प्रत्येक अंक उत्कृष्टता का प्रतिमान माना जाता है। 'चाँद' पत्रिका के 'फांसी अंक' को इतिहास के अनोखे दस्तावेज के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस अंक को ब्रिटिश शासन ने जब्त कर 'चाँद' पत्रिका के संपादक और संचालकों पर कठोर कानूनी कार्यवाही की थी। 'चाँद' पत्रिका को अपने पाठकों में नवचेतना जाग्रत कर जोश भरने के लिए स्मरण किया जाता है। प्रयाग से प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं और यहाँ के साहित्यकार–पत्रकारों ने तत्कालीन साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रकरणों पर जो लेखन–प्रकाशन किये, उनका साहित्यिक अवदान चिरकाल तक स्मरणीय रहेगा।

प्रयाग से प्रकाशित होने वाली 'सरस्वती' पत्रिका की संपादन–कला के समान संपादन–कला तत्कालीन किसी पत्र–पत्रिका में दृष्टिगत नहीं होती। 'सरस्वती' पत्रिका की संपादन–कला के संदर्भ में संपादन–कला के लिए विख्यात संपादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराड़कर जी का मंतव्य दृष्टव्य है– "मेरे लिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्व उनके संपादन कौशल में है। वैसे तो स्कूल–कालेज में भी मैं 'सरस्वती' पढ़ा करता था, पर सन् 1906 ई. में जब मैंने स्वयं पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया तब प्रतिमास 'सरस्वती' का अध्ययन करना मेरा नियम बन गया और सन् 1915 ई. तक ज्यों का त्यों बना रहा। कभी–कभी कक्षा में मेरे गुरू सखाराम देउस्कर को भी 'सरस्वती' पढ़कर सुनाया करता था और वे मुझे उसकी विशेषताएं समझाते थे। 'सरस्वती' का प्रत्येक अंक अपने आप में पूर्णता लिए होता था। ऐसी विशेषता मैंने अन्य किसी मासिक में अभी तक नहीं देखी थी। उसका प्रत्येक अंक संपादक के व्यक्तित्व की घोषणा करता था।"[02] वस्तुतः आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से साहित्यिक पत्रकारिता को सांस्कृतिक अनुष्ठान का स्वरूप प्रदान कर दिया था। बाद के समय में महत्वपूर्ण साहित्यकारों और पत्रकारों में गिने जाने वाले अनेक व्यक्ति 'सरस्वती' से सीख लेकर हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के

क्षेत्र में अपनी अलग विशिष्ट पहचान बनाने में सफल हुए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने नए–नए सामयिक विषयों पर लेख–निबंध लिखवाकर ऐसे लेखकों की पूरी पीढ़ी को दीक्षा दी, जो आगे चलकर हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में सफल हुए।

द्विवेदी युग में प्रयाग से ऐसी अनेक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हुईं, जिनसे हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता विचार, भाव और राष्ट्रीय चेतना के स्तर पर समृद्ध हुई। वास्तव में हिंदी साहित्य जगत को एक समृद्ध विरासत सौंपती द्विवेदीयुगीन प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना करती है। प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता के अवदान से विशुद्ध साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता के व्यापक क्षेत्र में व्यापकता का समावेश हुआ, साथ ही साहित्य और संस्कृति के व्यापक क्षेत्रों से हिंदी की निकटता स्थापित हुई। प्रयाग से प्रकाशित होने वाली अधिकांश पत्र–पत्रिकओं ने स्वाधीनता–संघर्ष में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यापक राष्ट्रीय हिस्सेदारी में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। यह प्रयाग के द्विवेदीयुगीन साहित्यकार–पत्रकारों का ही प्रयास था, जिससे भाषा के स्तर पर हिंदी अधिक से अधिक रचनात्मक तथा संप्रेषणीय हो पाई। साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यापक अनुभवी विद्वान डॉ. ज्योतिष जोशी के मतानुसार– "शब्दों की स्थानीयता का प्रादुर्भाव भी इस युग (द्विवेदी युग) में हुआ; यानी हिंदी अपने विभिन्न स्थानीय स्रोतों से शब्द लेकर अधिक समृद्ध हुई, अधिक जनोन्मुख हुई और इसी स्तर पर हिंदी में स्थानीयताओं का महत्व बढ़ा।"[03] अर्थात भोजपुरी, अवधि, बुन्देली, ब्रज, राजस्थानी, मारवाड़ी, पहाड़ी, मालवी, मगही, मैथिली, हरियाणवी और कौरवी जैसी अनेकों उपभाषाओं या बोलियों के शब्दों और मुहावरों से हिंदी भाषा का अनवरत विकास साहित्यिक पत्रकारिता के माध्यम से द्विवेदी युग में व्यापक स्तर पर आरंभ हुआ।

हिंदी को व्यावहारिक बनाने और हिंदी में संस्कृति की प्रक्रियाओं का प्रवेश कराने में द्विवेदीयुगीन प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता के योगदान को अनदेखा करना संभव नहीं है, क्योंकि प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता की सजगता और सार्थक प्रयत्नों के कारण ही हिंदी की जन–सामान्य की बोली–बानियों से नजदीकियां स्थापित हो सकीं। इस युग के प्रमुख संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा को विकसित करने के अपने इस प्रयास को शब्दों के प्रयोग से जोड़ते हुए लिखा है– "यह न देखता कि यह शब्द अरबी का है या फारसी अथवा तुर्की का। देखता सिर्फ यह कि इस शब्द, वाक्य अथवा लेख का आशय अधिकांश पाठक समझ लेंगे या नहीं। अपनी विद्वता की छाप छोड़ने की कोशिश मैंने कभी नहीं की।"[04]

द्विवेदी युग में प्रयाग से प्रकाशित होने वाली अधिसंख्य पत्र–पत्रिकाएं किसी न किसी साहित्यकार के संपादन में ही प्रकाशित होती थीं। यही कारण है कि ये पत्र–पत्रिकाएं जन–सामान्य में साहित्य–संस्कृति के संस्कार डालने में सफल होने के साथ साहित्यकार–पत्रकारों को भी उनके कर्तव्यों का बोध कराने में सफल रहीं। 'सरस्वती', 'हिंदी प्रदीप', 'चाँद', 'अभ्युदय', और 'मर्यादा' जैसी पत्रिकाओं के अंक आज भी हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के लिए अमूल्य धरोहर की तरह हैं, जिनमें हम अपने अतीत की जीवंत छवियाँ देख सकते हैं. द्विवेदीयुगीन प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता से संबद्ध हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण रचनाकारों ने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व को स्वीकार कर यह निश्चय कर लिया था कि हिंदी साहित्य के संवर्द्धन के लिए हिंदी गद्य का विकास करना अति आवश्यक है. इसके लिए इन्होंने आधुनिक हिंदी को विविध विषयों के विवेचन का माध्यम बनाने, हिंदी पद्य में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली को प्रतिष्ठित करने और हिंदी साहित्य से रीतिवाद को निकालने को अपना ध्येय बना लिया। प्रख्यात समालोचक डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार– द्विवेदी युग के साहित्यकार–पत्रकार "लगभग 20 वर्ष तक एकाग्र मन से इस निश्चित उद्देश्य की सिद्धि में लगे रहे और उन्हें सफलता प्राप्त हुई। उनके इस प्रयत्न के बिना सन् 20 के बाद का साहित्यिक विकास असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता।"[05]

द्विवेदीयुगीन प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता ने इस युग की भाषा और संवेदना दोनों के सुदृढ़ निर्माण में अहम भूमिका का निर्वहन किया। हिंदी साहित्य की अब तक की स्फुट समालोचना को आकार प्रदान करने का श्रेय द्विवेदी युग के साहित्यकार–पत्रकारों को दिया जाता है। प्रयाग से निकलने वाली अधिकांश पत्र–पत्रिकाओं ने विविध ग्रंधों की समालोचनाओं को प्रकाशित करके ग्रंथों के महत्व से हिंदी जगत को परिचित कराने का महत्वपूर्ण कार्य किया। द्विवेदीयुगीन अधिकांश साहित्य का विकास पत्रकारिता और निबंध–कला से हुआ है। इस युग में प्रयाग के साहित्यकार–पत्रकारों ने न केवल निबंधों में साहित्यिक शैली के साथ गंभीर चिंतन–कला को अपनी लेखन–कला में समाहित करने का प्रयास किया, बल्कि उत्तरोत्तर प्रखर होती राजनीतिक चेतना को तत्कालीन पत्रकारिता में समाहित किया। तात्पर्य यह है कि द्विवेदी युग में पत्रकारिता और निबंध एक–दूसरे के सहयोगी और पूरक रूप में परस्पर एक–दूसरे का विकास कर रहे थे। हिंदी साहित्य के प्रख्यात आलोचक डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार– "आचार्य द्विवेदी के अनुशासन में इन माध्यमों में गद्य की व्याकरणिक शुद्धता की ओर अपेक्षया सजक दृष्टिकोण अपनाया। इस युग में एक शब्द के स्वरूप अस्थिरता/अनस्थिरता को लेकर बालमुकुंद गुप्त और महावीर प्रसाद द्विवेदी के बीच जो विवाद चला, जिसमें उस समय के कुछ अन्य लेखकों ने भी शिरकत की, वह इस बात का प्रमाण है कि खड़ी बोली गद्य का रूप वयस्क हो चला था, और उसकी पहचान बन गयी थी।"[06]

हिंदी साहित्य के विकास में प्रयाग की द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता की महत्ता को इससे समझा जा सकता है कि द्विवेदी युग के शलाका मुरुष आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की साहित्यिक पत्रकारिता का शुभारंभ प्रयाग से प्रकाशित होने वाली प्रमुख साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' से ही हुआ था। प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता से प्रभावित होकर विभिन्न स्थानों से पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ हुआ था। द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता के प्रभाव से हिंदी के विकास के लिए सभा–समितियों को स्थापना पर भी जोर दिया जाने लगा था। इस समय के साहित्यकार–पत्रकारों ने अपनी मौलिक और अनुदित रचनाओं द्वरा हिंदी भाषा को समृद्धता करने के साथ जन–सामान्य में नवचेतना का संचार किया, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी–प्रेमियों की संख्या में अपार वृद्धि हुई। द्विवेदी युग में हिंदी–प्रेमियों के दो प्रकार पाए जाते थे। पहले वे– जो मूलतः हिंदी–सेवी थे और दूसरे वे– जो देशभक्ति से प्रभावित होकर हिंदी–सेवा की ओर उन्मुख हुए थे। दूसरे प्रकार के हिंदी–सेवियों को (जिन्होंने देशप्रेम से प्रभावित होकर हिंदी को अपनाया था) हिंदी का व्याकरणिक ज्ञान न होना सामान्य बात थी, जिसके कारण हिंदी का प्रचार–प्रसार तो बहुत तीव्र गति से हुआ, किंतु हिंदी का मनमाने ढंग से व्यावहारिक प्रयोग भी बढ़ गया। व्याकरण के नियमों की अवहेलना के कारण लेखक–साहित्यकार भी इस दोष से मुक्त न रह सके। हिंदी भाषा की इस अराजकता को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने स्थिरता प्रदान करने का महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्य किया। संपादक की हैसियत से प्रकाशित होने के लिए आये लेखों को शुद्ध करने में वे अत्यधिक श्रम करते थे। शब्द–भंडार, व्याकरण, विराम–चिन्हों के उपयोग की दृष्टि से द्विवेदी जी ने स्वयं अपने लेखों के माध्यम से हिंदी भाषा का आदर्श सबके सामने प्रस्तुत किया। भावों, विचारों और विषयों के विचार के साथ–साथ अनेक शासन संबंधी, न्याय–पद्धति संबंधी, शिक्षा संबंधी,

ज्ञान–विज्ञान संबंधी विविध भाषाओँ यथा– संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, मराठी आदि से शब्द ग्रहण करके हिंदी भाषा की अभिव्यंजना–शक्ति इस युग में साहित्यिक पत्रकारिता के माध्यम से बढाई गयी। इस समय के अधिसंख्य साहित्यिकों–पत्रकारों ने अपने–अपने व्यक्तित्व के अनुसार हिंदी की विविध शैलियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। हिंदी साहित्य के ख्यातिलब्ध प्रखर विद्वान आचार्य लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के अनुसार द्विवेदी युग में– "अनेक लेखकों ने आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, आलोचनात्मक, व्याख्यात्मक, भावात्मक, हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक, तर्क प्रधान, कवित्वपूर्ण, रूपकात्मक, कथनोपकथनात्मक आदि अनेक शैलियों को जन्म दिया।"[07]

सारतः आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके सहयोगी रचनाकारों ने विषय के उपयुक्त भावात्मक, आलोचनात्मक, गवेषणात्मक, व्यंग्यात्मक आदि अनेक प्रकार की शैलियों पर अपना अधिकार प्रकट किया। उद्धरणों और व्यंग्यों के माध्यम से प्रयाग के साहित्यकार–पत्रकारों ने साहित्यिक उच्छृंखलता प्रकट करने वाले रचनाकारों पर अंकुश लगाया। इस समय के रचनाकारों की शैलियों में विशदता और पांडित्य का प्राचुर्य स्पष्ट परिलक्षित होता है। हिंदी साहित्य में वाक्यों के सामंजस्य और संतुलन के साथ अनुकूल शब्दों का समावेश कर द्विवेदीयुगीन साहित्यकार–पत्रकारों ने गद्य–शैली को परिपक्वता प्रदान की।

भारतेंदु युग और द्विवेदी युग दोनों में अपने महत्व को स्थापित करने वाले पं. बालकृष्ण भट्ट ने 'हिंदी प्रदीप' के माध्यम से हिंदी भाषा का व्यापक प्रचार–प्रसार तो किया ही, साथ ही हिंदी साहित्य को समृद्धता प्रदान करने में भी पीछे नहीं रहे। भट्ट जी के पत्र में सरल और गंभीर दोनों प्रकार के निबंध और लेखों का प्रकाशन होता था, जिनके विषय सामयिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और साहित्यिक होते थे। 'हिंदी प्रदीप' की शैली में व्यंग्य, वक्रता और आत्मीयता के साथ रचनाकार के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। पं. बालकृष्ण भट्ट को समाज–सुधार के कार्यों से अत्यधिक लगाव था। उनका यह मानना था कि जब तक कुरीति–रूपी कोढ़ समाज से दूर नहीं होता, तब तक देश की उन्नति नहीं हो सकती है। बाल–विवाह के तो वह कट्टर विरोधी थे, शायद इसीलिए 'हिंदी प्रदीप' के अधिकांश अंकों में बाल–विवाह से संबंधित लेख दृष्टिगत होते हैं। 'हिंदी प्रदीप' में भट्ट जी द्वारा लिखित बाल–विवाह पर केन्द्रित एक आलेख का अंश–

"धर्मशास्त्र के किसी टकसाली ग्रंथ में बाल विवाह धर्म नहीं लिखा है, प्रत्युत महा–अधर्म और अन्याय अलबत्ता निश्चय किया गया है। कन्या को अलबत्ता योग्य वर के साथ विवाह देना कहा है, सो तभी जब वह विवाह के योग्य हो। और, पुत्र का विवाह करना पिता का धर्म कहीं नहीं कहा गया, किंतु उचित गुणों और विद्या के उपार्जन के उपरान्त अपने मन से यदि उसकी रुचि हो तो वह विवाह करके गृहस्थी के बंधन में पड़े, नहीं तो स्वच्छंद रहकर लोक या परलोक के बड़े–बड़े कामो में तत्पर हो..... ।"[08]

तात्पर्य यही है कि पं. बालकृष्ण भट्ट ने अपने लेखकीय–कर्म के दायित्व का निर्वहन पूर्ण निष्ठा के साथ करके सामाजिक कुरीतियों के प्रति जनसाधारण के मध्य चेतना जाग्रत करने का अभूतपूर्व कार्य किया। हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रंथ 'हिंदी शब्दसागर' की महत्ता से शायद ही कोई हिंदी–प्रेमी अनभिज्ञ होगा। हिंदी सहित्य को दिशा प्रदान करने में इस ग्रंथ की अहम भूमिका मानी जाती है। इस ग्रंथ का प्रणयन और प्रकाशन द्विवेदी युग में ही हुआ, और इसके संपादन में पं. बालकृष्ण भट्ट के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के संयोजन और बाबू श्यामसुंदरदास के संपादन में प्रकाशित हुए 'हिंदी शब्दसागर' ग्रंथ में भट्ट जी के योगदान से हिंदी साहित्य के विद्वान अच्छी तरह से परिचित हैं। भट्ट जी की महत्ता को हम इससे समझ सकते हैं कि 'हिंदी शब्दसागर' की भूमिका के रूप में लिखे गए हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने पं. बालकृष भट्ट के योगदान की विस्तृत चर्चा की है।

पं. बालकृष्ण भट्ट की भाषा जनसामान्य की भाषा थी, किंतु कभी–कभी वे देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग भी करते थे। विविध विषयों पर भट्ट जी द्वारा लिखित शताधिक निबंधों ने निबंध विधा को अप्रतिम समृद्धता प्रदान की। आलोचना के क्षेत्र में पं. बालकृष्ण भट्ट ने मौलिकता को अधिक उचित माना। परंपरावादी होते हुए भी इन्होंने परंपरा का अंधानुकरण कभी नहीं किया। इन्होंने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और सतर्क मस्तिष्क से परम्पराओं का अवलोकन करके निष्प्राण परंपराओं का त्याग ही श्रेयस्कर समझा। पं. बालकृष्ण भट्ट द्विवेदी युग के विचारकों और जागरूक साहित्यकारों में अग्रगण्य थे। इन्होंने प्रायः साहित्य की सभी विधाओं यथा– निबंध, उपन्यास, नाटक, प्रहसन, कहानी, आलोचना और कविता में साहित्य सृजन करके हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि की। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आधुनिक हिंदी साहित्य के वर्तमान स्वरूप के निर्माताओं में प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता के प्रमुख विद्वान् पं. बालकृष्ण भट्ट का नाम सर्वोपरि है। साधन संपन्न न होते हुए भी भट्ट जी ने देश और समाज की जो सेवा की, उसकी समता किसी से नहीं की जा सकती है।

हिंदी साहित्य में प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता के अंतर्गत महामना मदनमोहन मालवीय का नाम पत्रकारिता के उन्नायक के रूप में समादृत है। एक संपादक के रूप में मालवीय जी ने हिंदी साहित्य को भाषा, शिल्प, शैली और पत्रकारिता के संस्कारों से समृद्ध किया। 'अभ्युदय' मालवीय जी के पत्रकारीय–कर्म से उत्पन्न हुआ हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण अवदान है। हिंदी दैनिक 'हिंदुस्तान' महामना मदनमोहन मालवीय की परिकल्पना का ही प्रतिफल है, जिसे बाद में घनश्यामदास बिड़ला ने संभाला। हिंदी साहित्य के सफल संपादक–प्रकाशक के अतिरिक्त मालवीय जी को भारतीय संस्कृति और शाश्वत संस्कारों से ओत–प्रोत आध्यात्मिक नेता के रूप में भी स्मरण किया जाता है। इनके आध्यात्मिक नेतृत्व से उत्पन्न हुई यश–कीर्ति का उज्ज्वल पक्ष 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय' के रूप में देखा जा सकता है, जो भारत में उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। महामना मदनमोहन मालवीय न केवल संपादन/पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी साहित्य का विकास कर रहे थे, अपितु पत्र–पत्रिका प्रकाशन के लिए अन्य प्रकाशनों की यथासंभव मदद भी करते थे। 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद' में पत्रकारिता का अध्यापन कर रहे धनंजय चोपड़ा मालवीय जी के हिंदी–संघर्ष को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संघर्ष का दुर्लभ उदाहरण मानते हुए लिखते हैं– "मालवीय जी न केवल पत्र प्रकाशन के लिए इसकी ('स्वराज' पत्र) आर्थिक सहायता की, बल्कि जेल गये संपादकों के परिवारों के भरण–पोषण का जिम्मा भी उठाया। यही नहीं, पुरुषोत्तमदास टंडन को इन संपादकों की ओर से मुकदमा लड़ने को भी प्रेरित किया। ये मुकदमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की लड़ाई के दुर्लभ उदाहरण के रूप में इतिहास में दर्ज हैं।"[09]

पं. मदनमोहन मालवीय ने पत्रकारिता को हिंदी साहित्य के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया। वे भारतेंदु हरिश्चंद्र के उस अभियान को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे, जिसमें साहित्य की राह चलकर देशवासियों को स्वतंत्रता, स्वाभिमान और विकास का मर्म सहजता से समझाया जा सकता है। यही कारण था कि उन्होंने 'हिन्दोस्थान', 'अभ्युदय' और 'मर्यादा' सहित जितने भी पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन और संपादन में योगदान दिया, उनमें साहित्य को महत्वपूर्ण ढंग से न केवल स्वयं प्रकाशित किया; अपितु ऐसा करते रहने के लिए अन्य संपादकों को भी प्रेरित किया। यह मालवीय जी के प्रयासों का ही परिणाम था कि 'हिन्दोस्थान',

'अभ्युदय' और 'मर्यादा' से उस समय के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार–पत्रकार न केवल जुड़े हुए थे, बल्कि अपना उत्कृष्ट रचनात्मक सहयोग भी प्रदान कर रहे थे। मालवीय जी जब पत्र–पत्रिकाओं में विषय–सामग्री चयन की बात करते थे तो उस चयन में सर्वप्रथम साहित्य ही आता था। उन्होंने 05 मई, 1907 ई. के 'अभ्युदय में सुझाव दिया था कि– "दैनिक पत्र को प्रत्येक दिन के लिए (एक–दो पृष्ठ) कोई न कोई विशेष विषय के लिए नियत कर देना चाहिए। सोमवार को आप साहित्य पर लिखते हैं तो मंगलवार को ग्राम–संगठन पर लिखिए, बुधवार को शारीरिक उन्नति पर लिखते हैं तो बृहस्पतिवार को शिक्षा पर लिखिए।..... इस तरह पाठक को अपनी रुचि के अनुसार मसाला मिल जायेगा। इससे ग्राहक संख्या भी बढ़ेगी और जनता का उपकार भी होगा।"[10] महामना मदनमोहन मालवीय जब साहित्य की बात करते थे तो भाषा की शुद्धता और उसकी सहजता–सरलता पर उनका पूरा ध्यान रहता था। उनका यह मानना था कि भाषा में ऐसे शब्दों का प्रयोग हो, जिन्हें जन–सामान्य सरलता के साथ समझ सके। 'हिन्दोस्थान' के संपादन के दौरान उनके सहयोगी पं. वेंकटेश नारायण तिवारी ने अपने एक लेख में 'बोधगम्य' शब्द का प्रयोग कर दिया। इस पर मालवीय जी ने कुछ नाराजगी जताते हुए कहा– "क्या आप 'बोधगम्य' के स्थान पर 'सुबोध' या 'सरल' शब्द का प्रयोग नहीं कर सकते थे।"[11] मालवीय जी स्वयं भी सरल और तद्भव शब्दों का प्रयोग करते थे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वह शब्दों की सुगमता को प्रोत्साहित करते समय व्याकरण से किसी भी तरह का समझौता नहीं करते थे। उन्हें उच्चारण की गलतियाँ भी स्वीकार नहीं थीं, जिसके कारण वह वक्ता को टोकने में जरा भी संकोच नहीं करते थे।

पं. मदनमोहन मालवीय ने यह बहुत पहले समझ लिया था कि हिंदी के उन्नयन के बिना देश और समाज के उन्नयन की कल्पना करना व्यर्थ है। यही कारण था कि उन्होंने सन् 1884 ई. में प्रयाग में 'हिंदी उद्धारिणी सभा' नामक संस्था की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस संस्था से सम्बद्ध रहते हुए मालवीय जी ने 'हिंदी प्रदीप' सहित अनेक महत्वपूर्ण पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी के पक्ष में लेख लिखे और अनेक स्थानों में जाकर हिंदी के पक्ष में सभाएं की और भाषण दिए। मालवीय जी ने हिंदी में भाषण देकर अनेकों बार देश के अंग्रेज शासकों और भारतीय नेताओं को आश्चर्य में डाल दिया। अंग्रेजी के अच्छे मर्मज्ञ होने बावजूद इनका हिंदी–प्रेम सदैव चिरस्थाई रहा। कांग्रेस–सभापति का भाषण हो या इलाहाबाद विश्वविद्यालय का दीक्षांत भाषणय मालवीय जी ने अंग्रेजी में भाषण देने की परंपरा को तोड़कर हिंदी में भाषण देने की परंपरा का शुभारंभ किया। हिंदी के विकास और समृद्धि के लिए महामना मदनमोहन मल्वीएय के योगदान के लिए हिंदी साहित्य जगत सदैव इनका ऋणी रहेगा।

हिंदी साहित्य के सुपरिचित रचनाकार और राष्ट्रभक्त नेता गणेशशंकर 'विद्यार्थी' का प्रयाग की द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता में महत्वपूर्ण योगदान है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संरक्षण में हिंदी पत्रकारिता में प्रवेश लेने वाले गणेशशंकर 'विद्यार्थी' की साधना की राह पत्रकारिता और व्यावहारिक राजनीति से संबद्ध होने के बावजूद हिंदी साहित्य से संवेदनात्मक रूप से जुडी हुई थी। यह हिंदी साहित्य से 'विद्यार्थी' जी का प्रगाढ़ साहित्यानुराग ही था, जिसके कारण साहित्य से जुड़े रहने के उन्होंने 'कानपुर करेंसी' की नौकरी छोड़कर 'सरस्वती' पत्रिका में काम करना आरम्भ किया।

गणेशशंकर 'विद्यार्थी' पत्रकारिता की प्रत्यक्ष प्रभावी भूमिका के सामाजिक महत्व को अच्छी तरह समझते थे, इसीलिए उन्होंने देश–सेवा की अपनी उद्दाम आकांक्षा का माध्यम पत्रकारिता को बनाया। स्पष्ट है कि स्वतंत्र साहित्य–साधना के लिए गणेशशंकर 'विद्यार्थी' के पास अवकाश नहीं था, इसीलिए उन्होंने अपनी साहित्यिक भूख को आंशिक पोषण प्रदान करने के लिए अपनी देशभक्ति और साहित्यानुराग को अन्योन्याश्रित कर दिया। साहित्य और साहित्यकारों के प्रति किसी भी प्रकार की अवमानना विद्यार्थी जी को असह्य थी। साहित्यिक कार्यों में राजनीति और शासन के हस्तक्षेप का उन्होंने सदैव विरोध किया। गणेशशंकर 'विद्यार्थी' के प्रखर साहित्यिक विवेक का परिचय उन टिप्पणियों और पत्रों से मिलता है जो उन्होंने राजनीतिक–सामाजिक समस्याओं से संघर्ष करते हुए, समय–समय पर साहित्यिक कृतियों और साहित्यकारों पर अपना मंतव्य प्रकट करते हुए लिखा है। अपने प्रिय लेखक 'विक्टर ह्यूगो' का परिचय देते हुए उनकी टिप्पणी दृष्टव्य है–

"संसार की बड़ी–बड़ी धर्म पुस्तकें और समाचार की शिक्षा देने वाले ग्रंथ एक तरफ, और यह उपन्यास (ला मिजराब्लस) एक तरफ। रोचक इतना कि पंक्ति–पंक्ति पढ़े बिना नहीं रहा जा सकता। सहृदयता और संवेदना से इतना परिपूर्ण कि उसका एक–एक पन्ना आपको ऊपर से ऊपर उठता चला जायेगा। आरम्भ करते समय आप अनुभव करेंगे कि हम पृथ्वी पर चल रहे हैं। अंत करते समय आप अनुभव करेंगे कि हम आकाश में उड़ रहे हैं। सारा संसार हमारे ह्रदय की विशाल छाया से आच्छादित है, और दीन से दीन जन के आलिंगन के लिए हमारी आत्मा आगे बढती जा रही है।"[12]

गणेशशंकर 'विद्यार्थी' की संवेदना वही थी जो द्विवेदी युग के अन्य रचनाकारों की थी। अपनी रचनाधर्मिता से गणेशशंकर 'विद्यार्थी' ने श्रेष्ठ गद्य–शिल्पी होने का प्रमाण दिया है। उनके साहित्यिक अवदान की महत्ता को हिंदी जगत सहर्षता के साथ स्वीकार करता है। गोरखपुर हिंदी साहित्य सम्मलेन के अध्यक्ष पद के लिए गणेशशंकर 'विद्यार्थी' का चयन–सम्मान इसका प्रमाण है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में इन्होने हिंदी साहित्य के संबंध में अपनी स्पष्ट और प्रेरक अवधारणा का संकेत दिया था। 'लोकमंगल की भावना का हिंदी साहित्य में समावेश' को विद्यार्थी जी आचार्य रामचंद्र शुक्ल की तरह शीर्ष महत्व देते थे। उनका मानना था कि लोक–वेदना से जुड़कर ही साहित्यकार–पत्रकार की संवेदना वास्तव में सर्जनशील हो पाती है। इसी अवधारणा से विद्यार्थी जी ने अपने लेखन का उपजीव्य और उद्देश्य निर्धारित कर रखा था। वस्तुतः गणेशशंकर 'विद्यार्थी' द्विवेदी युग के प्रमुख पत्रकारों में से एक थे। द्विवेदीयुगीन समय में साहित्यकार और पत्रकार में अधिक अंतर न होने के कारण विद्यार्थी जी का प्रयाग की पत्रकारिता के साथ तत्कालीन हिंदी साहित्य के विकास में भी महत्वपूर्ण अवदान है, जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता हैं

निष्कर्षतः द्विवेदी युग में प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता ने हिंदी साहित्य को नवीन और समाजोन्मुखी स्वरूप प्रदान किया, जिससे साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न नवीन क्रांतिकारी मूल्य और मानदंडों की स्थापना हुई। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी इस युग के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके प्रेरणास्पद व्यक्तित्व की अमिट छाप हिंदी साहित्य और साहित्यिक पत्रकारिता पर स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। आचार्य द्विवेदी की प्रेरणा के परिणामस्वरूप अनेक रचनाकरों ने नए–नए सामयिक–सामाजिक विषयों पर साहित्यिक लेखन प्रारंभ किया। हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता और सामाजिकता आचार्य द्विवेदी की प्रेरणा का ही प्रतिफलन थी, इसीलिए हिंदी साहित्य की इस समयावधि (सन् 1900 ई. से 1920 ई. तक) को द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है।

प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता के योगदान से द्विवेदी युग में हिंदी साहित्य में नूतन विषयों पर वैविध्यपूर्ण लेखन–कार्य हुआ। द्विवेदीयुगीन हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता, मानवता, नीति, चारित्रिक और आदर्शपरक विशेषताओं को स्पष्ट देखा जा सकता है। इस समय हिंदी साहित्य में वर्ण्य विषयों का अत्यधिक विस्तार हुआ और हिंदी साहित्य जनोन्मुखी बना। द्विवेदीयुगीन प्रयाग की साहित्यिक

पत्रकारिता ने इन विषयों की स्थापना में अभूतपूर्व भूमिका का निर्वाह किया। हिंदी साहित्य के परिष्कार तथा विस्तार में द्विवेदीयुगीन प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता ने अनेकानेक रच्नात्मकान्दोल्नों को जन्म दिया। हिंदी साहित्येतिहास के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. रामचंद्र तिवारी का इस युग की साहित्यिक पत्रकारिता के संदर्भ में मंतव्य दृष्टव्य है– "आलोच्य युग (द्विवेदी युग) का साहित्य समृद्धि एवं भाषा–परिष्कार में पत्र–पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है। भारतेंदु युग में पत्रकारिता और साहित्य दोनों प्रायः एक ही स्तर पर विकसित हो रहे थे। आलोच्य युग में इस स्थिति में कुछ अंतर आया। कुछ गंभीर साहित्यिक पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगीं जो समाज सुधार या राजनीतिक उथल–पुथल से प्रत्यक्ष संबंध नहीं रखती थीं। गद्य की विविध शैलियों एवं विधाओंके विकास में आलोच्य युग की पत्रिकाओं का स्थाई योगदान है।"[13] सारतः यह कहा जा सकता है कि द्विवेदीयुगीन प्रयाग के साहित्यकारों और यहाँ की साहित्यिक पत्रकारिता ने हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिस पर चलकर हिंदी साहित्य की दिशा में उत्तरोत्तर रचनात्मक और उल्लेखनीय सुधार हुए।

संदर्भ

01. हिंदी पत्रकारिता : दशा और दिशा – जयप्रकाश भारती (सं.), पृष्ठ–57
02. हिंदी पत्रकारिता : दशा और दिशा – जयप्रकाश भारती (सं.), पृष्ठ–60
03. साहित्यिक पत्रकारिता – ज्योतिष जोशी, पृष्ठ–23
04. साहित्यिक पत्रकारिता – ज्योतिष जोशी, पृष्ठ–19
05. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – रामविलास शर्मा, पृष्ठ–17
06. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ–104
07. हिंदी साहित्य का इतिहास – लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृष्ठ–251
08. हिंदी प्रदीप – पं. बालकृष्ण भट्ट (सं.), सितंबर 1903, पृष्ठ–13
09. पत्रकारिता के युग निर्माता : मदनमोहन मालवीय – धनंजय चोपड़ा, पृष्ठ–44
10. अभ्युदय – मदनमोहन मालवीय (सं.), पृष्ठ–01
11. पत्रकारिता के युग निर्माता : मदनमोहन मालवीय – धनंजय चोपड़ा, पृष्ठ–79
12. भारतीय साहित्य के निर्माता : गणेशशंकर 'विद्यार्थी' – कृष्णबिहारी मिश्र, पृष्ठ–91
13. हिंदी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचंद्र तिवारी, पृष्ठ–534